झट्कज्ज्हादिदिशसिक्तस्यातोऽन्तर्हलो: SākaṭāVyā. iv. 1. 63, cf. P. vi. 4. 126.

अझटा (ajhaṭā) *f. Flacortia cataphracta*, cf. **अजटा**, अझटा बहुपुत्रा च भूधात्रीदामलक्यपि ṢadrasaNi. 22. 5.

अझल् (a-jhal) (Gr.) not included in the Pratyāhāra *jhal* अझल: पर: सिजिति Nyās. i. 31. 20; अझल्यप्यनुस्वार: PrakriKau. ii. 354. 3.

अझलन्तत्व (ajhalanta-tva) *n.* the state of not ending in a sound included in the Pratyāhāra *jhal* ईकारात्परो नुम् प्राप्त: अझलन्तत्वान्न भवति Pradī. vi. 7. 23 (*on* vii. 1. 1); नुम्विधौ तु झल्ग्रहणमनुवर्तिष्यते, अझलन्तत्वान्न भविष्यति PadMañ. *on* KāśiVṛ. *on* P. iii. 2. 141; नुमि कर्तव्येऽल्लोपस्य स्थानिवत्त्वेनाझलन्तत्वात् PariVṛ.(Sī.) 8. 4; अझलन्तत्वान्न नुम्, वारि SiddhāKau. 103A. 13.

अझलर्थ (ajhal-artha) *adj.* meant for the case where the suffix is not beginning with a sound included in *jhal* अज्झ(? झ)ला(? ल)र्थोऽयमारम्भ: Prasā. ii. 540. 12

अझलादित्व (ajhalādi-tva) *n.* the state of not having a consonant included in the Pratyāhāra *jhal* at the beginning अझलादित्वान्नाकार: Prasā. ii. 233. 9.

अझल्परत्व (ajhalpara-tva) *n.* the state of not being followed by a sound denoted by *jhal* अझल्परत्वादनुस्वारो न प्राप्नोति Pradī. vi. 263. 18 (*on* vii. 4. 85)

अझि (a-jhi) (Gr.) which is not an indeclinable खित्यझे: JaineVyā. iv. 3. 176, cf. P. vi. 3. 65.

अझीर्ण (a-jhīrṇa) *adj.* not decayed, not old (i. e. new) देहि प्रभो: प्रेष्य सुतोहनाय मे जीर्णाशुकाय:(? य) त्वमझीर्णमंशुकम् DhātuKā. 2. 57 (comm. अझीर्णं नवम् ··· झृष् वयोहानौ)

अझेरट (ajheraṭa) *m.*, *n.* name of a village, EI. vi. 140. 42.

अञ् (añ) (Gr.) *taddhita* suffix, *a* unaccented, causing the lengthened grade of the first syllable, with acute on it and with fem. in -ī (ṅīp and ṅīn); used in various meanings as (patronymic) उत्सादिभ्योऽञ् P. iv. 1. 86; JaineVyā. iii. 1. 71; SākaṭāVyā. ii. 4. 10; SiddhaHe. vi. 1. 19; अनृष्यानन्तर्ये बिदादिभ्योऽञ् P. iv. 1. 104 (बैद:); JaineVyā. iii 1. 93; CāndraVyā. ii. 4. 22; जनपदशब्दात् क्षत्रियादञ् P. iv. 1. 168 (वैदेह:); JaineVyā. iii. 1. 150; SākaṭāVyā. ii. 4. 98; SiddhaHe. vi. 1. 114; (coloured with) हरिद्रामहारजनाभ्यामञ् वक्तव्य: Vār. 4 *on* P. iv. 2. 2; (covered with) द्वैपवैयाघ्रादञ् P. iv. 2. 12; (collection) अनुदात्तादेरञ् P. iv. 2. 44 (कापोत, मायूर); (cāturarthika) ओरञ् P. iv. 2. 71 (पारशव:); P. iv. 2. 72 (ऐषुकावत:); (when speaking of wells) P. iv. 2. 73; iv. 2. 74; (belonging to) मद्रेभ्योऽञ् P. iv. 2. 108; SākaṭāVyā. iii. 1. 18; SiddhaHe. vi. 3. 24; ग्रामजनपदैकदेशादञ्ठञौ P. iv. 3. 7; (born in) अणञौ च P. iv. 3. 33 (आपकर:); (a citizen of) सिन्धुतक्षशिलादिभ्योऽणञौ P. iv. 3. 93; SiddhaHe. vi. 3. 216; (produced by) क्षुद्राभ्रमरवटरपादपादञ् P. iv. 3. 119; (वातप for पादप) CāndraVyā. iii. 3. 83; (modification or member) ओरञ् P. iv. 3. 139 (दैवदारवम्); P. iv. 3. 140; iv. 3. 141; iv. 3. 154; SākaṭāVyā. ii. 4. 161; SiddhaHe. vi. 2. 45; P. iv. 3. 168; (duty or function) ऋतोऽञ् P. iv. 4. 49 (हौत्रम्); P. v. 1. 15; JaineVyā. iii. 4. 14; CāndraVyā. iv. 1. 18; SākaṭāVyā. iii. 2. 222; SiddhaHe. vii. 1. 45; (bought with) शूर्पादञन्यतरस्याम् P. v. 1. 26; CāndraVyā. iv. 1. 29; SākaṭāVyā. iii. 2. 133; (ruler) P. v. 1. 42; CāndraVyā. iv. 1. 55; (child of) पृथिव्या ञाञ् SākaṭāVyā. ii. 4. 9; SiddhaHe. vi. 1. 18; (strength of a group) सप्तनोऽञ् छन्दसि P. v. 1. 61; (nature or duty) प्राणभृज्जातिवयोवचनोद्गात्रादिभ्योऽञ् P. v. 1. 129; JaineVyā. iii. 4. 119; CāndraVyā. iv. 1. 145; SākaṭāVyā. iii. 3. 12; SiddhaHe. vii. 1. 66; (food consisting mostly of) कुल्माषादञ् P. v. 2. 83; (pleonastic) पर्श्वादियौधेयादिभ्योऽणञौ P. v. 3. 117; SiddhaHe. vii. 3. 65; (cāturarthika) अहरादिभ्योऽञ् SiddhaHe. vi. 2. 87 (आह्नम्, लौलम्); SākaṭāVyā. iii. 1. 57; iii. 1. 201 = P. अण्; SākaṭāVyā. iii. 2. 63 = P. ण.

अञंश (añ-aṁśa) *m.* part consisting of the suffix *añ* अञंशे च लौकिकमेव गोत्रम् LaSabdeSe. ii. 278. 11.

अञन्त (añ-anta) *adj.* ending in the suffix *añ* अञन्तं यद्बहुषु यञन्तं यद्बहुष्वित्येवं (लुक्) भविष्यति MahāBh. i. 491. 10 (*on* ii. 4. 62); शार्ङ्गरवादेरञन्ताच जातिवाचिन: स्त्रियां ङीन् स्यात् PrakriKau. i. 376. 2; SiddhāKau. 230A. 18.

अञन्तत्व (añanta-tva) *n.* the state of ending in the suffix *añ* अञन्तत्वाभावात् Pradī. iv. 226B. 14 (*on* iv. 3. 154); अन्यत्र अञन्तत्वात् ङीप् PrakriKau. i. 355. 5; i. 726. 3; SiddhāKau. 123A. 13; VaiyāBhū. 144. 23; LaSabdeSe. ii. 231. 13.

अञि (a-ñi) (Gr.) not having the causal suffix, non-causal verb (cf. P. अणि); घोऽञौ ञे: शब्दाशनगतिज्ञार्थाद्यग्रहदृशश्रोत्रखादनीक्रन्दायशब्दायह्वादासुतघबहाहिंसाभक्षो हृक्रमाभिवादिदृशस्तु वा MugdhaBo. 5. 5 (46. 1) (अञ्यन्तानां शब्दार्थादीनां यो घ: स ञ्यन्तानां ढं स्यात्); ञेर्डेऽञौ घे MugdhaBo. 23. 38 (139. 1); (अञ्यन्ते यङ्ं ञ्यन्ते यदि घो भवति तस्माज् ञ्यन्ताद् धातोर्घे मं स्यादस्मृतौ); MugdhaBo. 8. 47 (86. 7); 22. 2 (135. 1)

अञित् (a-ñit) *adj.* not having *ñ* as an indicatory letter वृवृञोरञितो धातोर्वृणाति वरणे भवेत् DaivaVyā. 37; 38.

अञ्च् (añc-) I. U. [DhātuPā. sets up *añcu* गतिपूजनयो: 1. 203; and *ancū* गतौ याचने च 1. 915 with the remark अचु इत्येके अचि इत्यपरे; as against *ac-*, we can set up *añc-* with constant nasal as original; later *añc-* with and without nasal taken together cf. **अच्**: MAYR., नाञ्चे: पूजायाम् P. vi. 4. 30; CāndraVyā. v. 3. 50; SiddhaHe. iv. 2. 46; अञ्चे: पूजायाम् P. vii. 2. 53; CāndraVyā. v. 4. 113; JaineVyā. v. 1. 101; अञ्चोऽनपादाने P. viii. 2. 48; CāndraVyā. vi. 3. 84; JaineVyā. v. 3. 65; SiddhaHe. iv. 2. 72; अञ्चेर्नत्वे व्यक्तप्रतिषेध: Vār.1 *on* P. viii. 2. 48; नैतदञ्चे रूपम्। अञ्चेरेतद् रूपम् MahāBh. iii. 408. 15 (*on* viii. 2. 48); at the end of a compound-word, P. v. 3. 30; CāndraVyā. iv. 3. 29; SiddhaHe. vii. 2. 123; P. v. 4. 8; CāndraVyā. iv. 2. 23; accent P. vi. 1. 170; vi. 1. 182; DhātuPra. 1. 185 (21. 19); DhātuVṛ. 1. 190; root with nasal used with preverbs as अभि (AV.(P.) आ (AV.), उद् (ṚV.), (SatBr.), (ṚV.) and सम् (VājaS.); अञ्च् is often used for etymological purpose and given a suitable sense, P.iii. 2. 59; अङ्कोऽञ्चते: Nir. 2. 28 (57. 15); पराञ्चि परागञ्चन्ति गच्छन्तीति खानि KāṭhUBh. 149. 12 (*on* 4. 1); BṛĀraUBh. 448. 6 (*on* iii. 8. 10); ChāndoUBh. 389. 9 (*on* vi. 10. 1); स एव देहादिष्विदन्तया बहिर्भावमापद्यमानेषु प्रातिलोम्येनाञ्चतीवोपलक्ष्यते PañcPā. 35. 23 (*on* i. 1. 0); प्रथममस्यामञ्चति सवितेति प्राची NyāyKa. 68. 25 = Kiraṇā. 125. 17; विषयप्रातिकूल्येन स्वान्त:करणाभिमुखमञ्चति या चेतना दृक्शक्ति: सा प्रत्यक्चेतना RājMār. 13. 21; प्रति प्रति अञ्चति गच्छतीति प्रत्यक् Bhām. 747. 16 (*on* iv. 3. 7); एष एव चिद्धातुरुपाधि प्रत्युपाधि प्रत्यञ्चति प्रतिबिम्बित इति प्रत्यगात्मोच्यते PrakaVi. 196. 22; Upask. 117. 9 (*on* ii. 2. 14)] **1** to curve, to bend towards, to go to, to wander त्वमप्सरायमाणेह स्वतन्त्रा कथमञ्चसि Bhaṭṭi. 4. 22; 14. 99; कच्चिदञ्चति लोकेषु लीला लीलावतीपते: Kapphiṇā. 16. 16; एतन्मनाग्वलतु लोचनमञ्चतु भ्रू: RāmC. 19. 70; यावद्यावच्चिरस्थायं देहादीन् प्रत्यगञ्चति NaiṣkSi. 124. 2; दक्षिणं करमुपैति वामतो वाममञ्चति च दक्षिणादिति BālBhā. 1. 66; BhāgP. x. 44. 13; शालामञ्च तमङ्गमञ्च वलभीमञ्चेति वेश्माञ्चति SaraKaṇṭhā. 176. 5; प्राचीमञ्चति किञ्च दुग्धलहरीमुग्धे विधौर्धामनि PrasaRā. 7. 57; अयमस्तमञ्चति रवि: SaduktiKa. 104. 24; 58. 21; उदयगिरिगुहागृहान्निरीयाञ्चति हरिरम्बरकाननस्थलीषु VasaViKā. 9. 56; तत्रैतदीयं यशो दिग्पालानिव साक्षितां गमयितुं दिङ्मण्डलीमञ्चति CaturCin. iii(2). 3. 2; पत्युर्मुखे तु स्वमुखं निवेश्य प्रेम्णा मनागञ्चति दन्तवेष्ट(? ष्ट)म् PañcSā. 4. 41; प्लवमानाञ्चति यद्यशोऽम्बुधौ धरणी SaṅkaDigVi.(Mā.) 3. 4 (*but* comm. धरणी पृथ्व्यञ्चति पूजिता भवति राजत इत्यर्थ:); 6. 8; मुक्ताफलं शशिसमस्य मुखस्य तस्या हेमोमैकान्तगतमञ्चति नासिकान्ते Subhāṣi. 1504; पुत्रादेव त्राणमेषां कृतं चेत्कि कोऽप्यञ्चेदान्तराञ्चेतुमेतान् BhartṛNi. 5. 17; पश्चादञ्चन्ति तेषामुपरि करुणया रामभूपालमौले:···कटाक्षा: PadyaVe. 104; Ḍamaru. 28; **2** to attain, to reach, to possess, to have (mostly with abstract objects) यत: स्वलक्षणं जातिस्तद्योगो जातिमांस्तथा। बुद्ध्याकारो न शब्दार्थे घटामञ्चति तत्त्वत: TattvSaṁ. 871; शिर:स्खलद्भ्रंशिसुरस्रवन्तीनिषेवणाभ्यागतहंसलीलाम्। ···अञ्चति पाञ्चजन्य: HarVi. 9. 21; धृतराष्ट्रस्य पाण्डोश्च ममाज्ञा मौलिमञ्चति BālBhā. 2. 12; अन्यथा कृतबाधक इव ध्रुवं प्रञ्चजन: पञ्चतामञ्चेत् YaśasCam. ii. 142. 5; इति संविद्विवर्तत्वं प्रपञ्च: स्फुटमञ्चति SaṁviSi. 97. 14; कुम्भमुवो जयतीह माहात्म्यं तद्वडवामुखतेजसश्चापि। यस्य जगत्प्रलयप्रगल्भोमिरञ्चति रोचकगोचरं सिन्धु: ChandaśCū. 2. 127 (3) (comm. रोचकगोचरं बुभुक्षाविषयं सिन्धुरञ्चति प्रकटीकरोति); PuṣpBaVi. 10; श्रुतं हन्त भवानद्यो परिचयश्चेदौचितीमञ्चति MudriKu. 1. 27; तेन किं सकलचक्रविलूने बाणबाहुनिचयेऽञ्चति चित्रम् NaiṣC. 21. 97; एकं महाव्रतम् ··· । कामधेनुपय:सिक्तकल्पद्रो: साम्यमञ्चति MalliC. 7. 521; 1. 467; अथ प्रस्तुतगुणस्थिति: सम्यक् परीक्षाक्षमाणां दिग्यदृशा मेवौचितीमञ्चति SyādvāMañ. 2(19); 14(43); पतितस्य तस्य कृपाणस्य कूपद्वारे तिर्यक्पतनाच्छिन्नाङ्ग: पञ्चतामानञ्च ViviTīKa. 64. 18; 82. 14; गुरवो देवलोकललनानयनत्रिभागपात्रत्वमानञ्चु: PrabaK. 34. 5; 74. 17; 76. 28; त्वामनुसन्दधान: ··· सायुज्यमम्बाञ्चति साधकेन्द्र: SaṅkaDigVi.(Mā.) 12. 36; सौभाग्यसीमपदमञ्चति पञ्चबाण: KṛṣṇaKa. 3. 58; शृङ्गारत: समरसंभवो रसो नूनं विशेषमधुरत्वमञ्चति HammīMaKā. 12. 13; 2. 32; Subhāṣi. 2629; KaṁVa. 1. 14;